मेरी ज़िन्दगी

मेरा बचपन नादानियों में गुज़र गया। जब से होश सम्भाला, अपने बड़ों की तरह दुनिया के पीछे भागता रहा। **मुझे ग़र्ज़ दौलत से थी, चाहे हलाल तरीक़े से आये या हराम तरीक़े से, सूदी लेन-देन, क्रिकेट मैच पर सट्टा, प्राइज़ बाँड, लॉटरी और रिश्वत की कमाई ने बहुत जल्द मुझे करोड़पति बना दिया।** इतनी दौलत इकट्ठी की कि ख़ुद मुझे अंदाजा नहीं था। हर क़िस्म का नया फ़ैशन मेरे घर में आता, हाई-फ़ाई टीवी, ढेर सारी फिल्में, डिश ग़र्ज़ ऐसी कोई नहूसत न थी जो मेरे घर में मौजूद न थी। रात को फैमिली के साथ कम से कम एक फिल्म देखकर सोना हर रोज़ का मामूल था। जब कोई मेहमान घर पर आता तो मैं बड़े फ़ख़्र से अपनी छोटी बेटी को आवाज़ देता, बेटी! ज़रा अंकल को डांस करके तो दिखाओ। दूसरे बच्चे भी ड्रामों और फिल्मों के मुख़्तलिफ़ किरदारों की नक़ल उतारने में बड़े माहिर थे, मुख़्तलिफ़ क़िस्म के डायलॉग उनको ख़ूब याद थे। वे झूम-झूमकर गाने सुनाते और अच्छी कलाकारी पर इनाम पाते।

मेरे घर के गेट पर नुमायां लिखा था, '**हाज़ा मिन् फ़ज़्लि रब्बि।**' अक्सर मेरे ज़हन में आता कि शैतान मेरे बारे में क्या सोचता होगा कि दौलत इकट्ठा करने के सारे गुर मैंने सिखाए, फिर इसी कमाई से इतना आलीशान घर बनाया और अब इतना बेवफ़ा निकला कि इस पर लिखवा दिया, '**हाज़ा मिन् फ़ज़्लि रब्बि**' (यह मेरे रब के फ़ज़्ल से है)।

आज तो मुझे इस सुकून की बहुत ज़रूरत थी, आज मेरा दिल गाना सुनने को क्यों नहीं चाह रहा है? मुझे शहर के सबसे बड़े अस्पताल के एयर कंडीशंड कमरे में लाकर लिटा दिया गया।

मैं बिस्तर पर पड़ा छत को घूर रहा था। हैरानी की बात है कि उस वक़्त हॉस्पिटल की छत मेरे लिये एक बहुत बड़ी स्क्रीन की तरह थी और उस पर जैसे मेरी घिनौनी ज़िन्दगी की पूरी फिल्म चल रही थी। मेरे छोटे-बड़े सभी गुनाह मुझे बेहद साफ़ नज़र आ रहे थे। आह! कैसी अ़ज़ीब फिल्म थी। दुनिया में, मैं जब भी गुनाह करता तो दरवाजे बंद कर लेता कि कोई देख न ले, मगर अफ़सोस! ये न सोचा कि एक ज़ात (अल्लाह) ऐसी भी है जिसे मेरी एक-एक हरकत मा'लूम है। हाय! मेरी बदबख़्ती कि फ़र्शवालों से मुझे इतनी शर्म आती रही और अ़र्शवाले से मुझे कभी शर्म नहीं आई। आह! कितना बेशर्म था मैं। उस वक़्त मुझे एहसास हुआ कि अल्लाह तआ़ला की हस्ती किस क़द्र साबिर है। मेरी लगातार बदआ़'मालियों और काली करतूतों पर उस ज़ात (अल्लाह) ने कितना स़ब्र किया और मैं ऐसा ज़ालिम था कि इतनी मोहलत दिये जाने के बावजूद अपनी जान पर ज़ुल्म करता रहा। अपनी इसी भयानक फिल्म में उलझा हुआ था कि मुझे महसूस हुआ जैसे मेरे आसपास कुर्आन की तिलावत हो रही है और **ला इलाह इल्लल्लाह.....** का विर्द हो रहा है। फिर अचानक कलमे के विर्द में तेजी आ गई। हैरत है! जब मैं गाने सुनता था तो बेइख़्तियार मेरी ज़बान हरकत करती और साथ-साथ मैं भी गुनगुनाता था, मगर आज मेरे चारों तरफ़ एक ही जुमले का विर्द हो रहा था, मगर इतनी कोशिशों के बावजूद भी मेरी ज़बान से एक लफ़्ज़ भी जारी न हो सका।

मुझे महसूस हो रहा था कि जैसे मुझे उबलती हुई देग में डाल दिया गया हो या तलवार से मेरे जिस्म के टुकड़े किये जा रहे

और तरह-तरह के अ़ज़ाबों की तुझे ख़ुशख़बरी है। ऐ मेरे अल्लाह! क्या हर बदकार की रूह इस तरह निकलती है? इस वक़्त मैं इतनी तक्लीफ़ महसूस कर रहा हूँ कि किसी ने बारीक सा कपड़ा काँटेदार टहनी पर डालकर अपनी तरफ़ खींचा हो। इस तरह मेरा सारा बदन तार-तार हो गया, पहले पैर ठण्डे हुए, फिर पिण्डलियाँ और फिर धीरे-धीरे पूरा बदन ठण्डा होता महसूस हुआ, **मुझे ऐसा लगने लगा,**

..... और मैं मर गया

मौत के फ़रिश्ते ने मेरी रूह खींच कर निकाली, जैसे गर्म सलाख, गीले ऊन में रख कर खींची गई हो। उसी वक़्त आसमान से काले चेहरे वाले फ़रिश्ते उतरे, उन्होंने पलक झपकते ही मेरी रूह एक गंदे से टाट में लपेट दी जो उनके पास पहले से मौजूद था। एक ऐसा भी वक़्त था कि तब मैं बेहतरीन सूट-बूट और आ़ला क़िस्म के इत्र लगाकर घर से निकलता था और जिस गली से गुज़र जाता था, पता चलता था कि इस गली से फ़लाँ साहब गुज़रे हैं। मगर आज मुझसे इस क़दर बदबू आ रही थी, जैसे कई जानवरों की लाशें इकट्ठा पड़ी हों। फ़रिश्ते मेरी रूह को नीले आसमान की तरफ़ ले जाने लगे। फ़रिश्तों की जिस जमाअ़त से वे गुज़रते, उनसे पूछा जाता कि ये ख़बीस रूह किसकी है? और वे जवाब में कहते, फ़लाँ बिन फ़लाँ की। बेहद बुरे त़रीक़े से वे मेरा नाम बता रहे थे। जिस तरफ़ से भी मेरा गुज़र हुआ, अनगिनत फ़रिश्तों की आवाज़ें मेरे कानों से टकराती, ला'नत हो! ला'नत हो!!

आसमानी दुनिया में पहुँचकर फ़रिश्तों ने दरवाज़ा खोलने के लिये कहा, मगर दरवाज़ा नहीं खोला गया। आवाज़ आई, इस क़िस्म के लोगों के लिये आसमान के दरवाज़े नहीं खोले जाते। और न ही इस क़िस्म के लोग जन्नत में दाख़िल होते हैं। इनका जन्नत में